17

श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र-VI

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने देवी ललिता के 1000 नामों में से कुछ नामों के विषय में जाना। इस पाठ में उनके अन्य नामों के विषय में जानेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- सूक्त में दिये श्लोकों का शुद्ध उच्चारण कर पाने में;
- देवी ललिता की विशेषताएं बता पाने में; और
- उनके नामों का अर्थज्ञान कर पाने में ।

17.1 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (126-137)

त्र्यक्षरी दिव्य–गन्धाढ्या सिन्दूर–तिलकाञ्चिता ।
उमा शैलेन्द्रतनया गौरी गन्धर्व–सेविता ।। १२६ ।।

630) त्र्यक्षरी – वह जो तीन अक्षरों का रूप है

631) दिव्यगन्धाढ्या – वह जिसके पास ईश्वरीय गंध है

632) सिन्दूरतिलकाञ्चिता – वह अपने माथे में सिंदूरी बिंदी लगाती है

633) उमा – वह ओम में है

634) शैलेन्द्रतनया – वह पहाड़ों के राजा की बेटी है

635) गौरी – वह जो सफेद रंग की है

636) गन्धर्वसेवीता – वह जो गन्धर्वों द्वारा पूजित है

विश्वगर्भा स्वर्णगर्भाऽवरदा वागधीश्वरी ।
ध्यानगम्याऽपरिच्छेद्या ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा ।। १२७ ।।

637) विश्वगर्भा – वह अपने पेट में ब्रह्मांड लेती है

638) स्वर्णगर्भा – चमतेवद वह जो सोने का पात्र है

639) अवरदा – वह बुरे लोगों को सजा देता है

640) वागधीश्वरी – वह जो शब्दों की देवी है

641) ध्यानगम्या – वह जो ध्यान द्वारा प्राप्त किया जा सकता है

642) अपरिच्छेद्या – वह एक निश्चित स्थान पर होने की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती

643) ज्ञानदा – वह जो ज्ञान देता है

644) ज्ञानविग्रहा – वह जो ज्ञान की पहचान है

सर्ववेदान्त–संवेद्या सत्यानन्द–स्वरूपिणी ।

लोपामुद्रार्चिता लीला–कृल्प्त–ब्रह्माण्ड–मण्डला ।। १२८।।

645) सर्ववेदान्तसंवेद्या – वह जो सभी उपनिषदों द्वारा जाना जा सकता है

646) सत्यानन्दस्वरूपिणी– वह जो सत्य और आनंद की पहचान है

647) लोपामुद्रार्चिता– ववह अगस्त्य की पत्नी लोपा मुद्रा द्वारा पूजी जाती है

648) लीलाकृल्प्तब्रह्माण्डमण्डला – चसंल वह जो सरल खेल द्वारा विभिन्न ब्रह्मांडों का निर्माण करता है

अदृश्या दृश्यरहिता विज्ञात्री वेद्यवर्जिता ।

योगिनी योगदा योग्या योगानन्दा युगन्धरा ।। १२९।।

श्री ललीता सहस्र नाम स्तोत्र-VI

649) अदृश्या – वह नहीं देखी जा सकती

650) दृश्यरहिता – वह जो चीजों को अलग तरह से नहीं देखती है

651) विज्ञात्री – वह जो सभी विज्ञानों को जानता है

652) वेद्यवर्जिता – वह जिसे कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं है

653) योगिनी – वह जो योग की पहचान है

654) योगदा – वह जो योग का ज्ञान और अनुभव देता है

655) योग्या – वह जो योग द्वारा पहुँचा जा सकता है

656) योगानन्दा – वह जो योग से सुख पाता है

657) युगन्धरा – वह जो युगा पहनती है (समय का विभाजन)

इच्छाशक्ति–ज्ञानशक्ति–क्रियाशक्ति–स्वरूपिणी ।
सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूप–धारिणी ।। १३०।।

658) इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिस्वरूपिणी – वह जो इच्छा, ज्ञान और क्रिया की शक्तियों के रूप में है

659) सर्वधारा – वह जो हर चीज का आधार है

660) सुप्रतिष्ठा – वह जो ठहरने की सबसे अच्छी जगह है

661) सदसद्रूपधारिणी – वह जो हमेशा उसके पास सच्चाई है

अष्टमूर्तिर् अजाजैत्री लोकयात्रा–विधायिनी ।

एकाकिनी भूमरूपा निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ।। १३१।।

662) अष्टमूर्तिर् – वह जिसके आठ रूप हैं

663) अजाजैत्री – वह जो अज्ञानता पर जीता है

664) लोकायात्रविधायिनी – वह जो दुनिया को घुमाती है (यात्रा)

665) एकाकिनी – वह जो केवल और केवल स्वयं है

666) भूमरूपा – वह है जो हम देखते हैं, सुनते हैं और समझते हैं

667) निर्द्वैता – वह जो सब कुछ एक के रूप में बनाता है

668) द्वैतवर्जिता – वह जो द्वैत से परे है। वह एक से अधिक से दूर है

अन्नदा वसुदा वृद्धा ब्रह्मात्मैक्य–स्वरूपिणी ।

बृहती ब्राह्मणी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दा बलिप्रिया ।। १३२।।

669) अन्नदा – वह जो भोजन देती है

670) वसुदा – वह जो धन देता है

671) वृद्धा – वह जो पुराना है

672) ब्रह्मात्मैक्यस्वरूपिणी – वह जो खुद को ब्रह्म–परम सत्य में विलीन कर लेती है

673) बृहती – वह जो बड़ा है

674) ब्राह्मणी – वह ईश्वर की पत्नी है

675) ब्राह्मी – वह जो ब्रह्म का एक पहलू है

676) ब्रह्मानन्दा – वह जो परम सुख है

677) बलिप्रिया – वह जो मजबूत पसंद करता है

भाषारूपा बृहत्सेना भावाभाव–विवर्जिता ।
सुखाराध्या शुभकरी शोभना सुलभा गतिः ।। १३३।।

678) भाषारूपा – वह भाषा का व्यक्तिकरण है

679) बृहत्सेना – वह जिसके पास एक विशाल सेना हो

680) भावाभावविवर्जिता – वह जिसके पास जन्म या मृत्यु नहीं है

681) सुखाराध्या – वह जिसकी पूजा सुख से की जा सकती है

682) शुभकरी – वह जो अच्छा करती है

683) शोभना सुलभा गतिः – वह जो पाना आसान है और केवल अच्छा करती है

राज–राजेश्वरी राज्य–दायिनी राज्य–वल्लभा ।

राजत्कृपा राजपीठ–निवेशित–निजाश्रिता ।। १३४ ।।

684) राजराजेश्वरी – वह देवराज, यक्ष राजा, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र जैसे राजाओं की देवी है

685) राज्यदायिनी – वह जो वैकुंठ, कैलासा आदि जैसे राज्य देता है

686) राज्यवल्लभा – वह जो सभी प्रभुत्वों की रक्षा करे

687) राजत्कृपा – वह जिसकी दया हर जगह चमकती है

688) राजपीठनिवेशितनिजाश्रिता – वह राजाओं के रूप में लोगों से संपर्क करता है

राज्यलक्ष्मीः कोशनाथा चतुरङ्ग–बलेश्वरी ।

साम्राज्य–दायिनी सत्यसन्धा सागरमेखला ।। १३५ ।।

689) राज्यलक्ष्मीः – वह राज्य का धन है

690) कोशनाथा – वह जो राजकोष की रक्षा करता है

691) चतुरङ्गबलेश्वरी – वह चार गुना सेना (मन, मस्तिष्क, विचार और अहंकार) का नेता है

692) साम्राज्यदायिनी – वह जो आपको सम्राट बनाता है

693) सत्यसन्धा – वह जो सच्चा है

694) सागरमेखला – वह जो समुद्र से घिरा पृथ्वी है

दीक्षिता दैत्यशमनी सर्वलोक–वशङ्करी ।
सर्वार्थदात्री सावित्री सच्चिदानन्द–रूपिणी ।। १३६ ।।

695) दीक्षिता – वह जो अग्नि यज्ञ करने का अधिकार देता है

696) दैत्यशमनी – वह विरोधी देवताओं को नियंत्रित करता है

697) सर्वलोकवशङ्करी – वह सारी दुनिया को अपने नियंत्रण में रखती है

698) सर्वार्थदात्री – वह जो सभी धन देता है

699) सावित्री – वह जो सूरज की तरह चमकता है

700) सच्चिदानन्दरूपिणी – वह जो परम सत्य की पहचान है

देश–कालापरिच्छिन्ना सर्वगा सर्वमोहिनी ।
सरस्वती शास्त्रमयी गुहाम्बा गुह्यरूपिणी ।। १३७ ।।

701) देशकल्परिच्छिन्ना – वह जो क्षेत्र या समय से विभाजित नहीं है

702) सर्वगा – वह जो हर जगह से भरा है

703) सर्वमोहिनी – वह जो हर चीज को आकर्षित करता है

704) सरस्वती – वह जो ज्ञान की देवी है

705) शास्त्रमयी – वह जो विज्ञान का अर्थ है

706) गुहाम्बा – वह भगवान सुब्रह्मण्य (गुहा) की माँ हैं

707) गुह्यरूपिणी – वह जिसका रूप सभी से छिपा है

17.2 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (138-150)

सर्वोपाधि–विनिर्मुक्ता सदाशिव–पतिव्रता ।
सम्प्रदायेश्वरी साध्वी गुरुमण्डल–रूपिणी ।। १३८।।

708) सर्वोपाधिविनीर्मुक्ता – वह जिसके पास कोई सिद्धांत नहीं है

709) सदाशिवपतिव्रता – वह जो हर समय भगवान शिव के लिए समर्पित पत्नी है

710) सम्प्रदायेश्वरी – वह जो कर्मकांड की देवी है या वह जो शिक्षक–छात्र पदानुक्रम की देवी है

711) साध्वु – वह जो निर्दोष है

712) ई – वह "ई" अक्षर कौन है

713) गुरुमण्डलरूपिणी – वह ब्रह्मांड के शिक्षक हैं

श्री ललीता सहस्र नाम स्तोत्र-VI

कुलोत्तीर्णा भगाराध्या माया मधुमती मही ।
गणाम्बा गुह्यकाराध्या कोमलाङ्गी गुरुप्रिया ।। १३६।।

714) कुलोत्तीर्णा – वह जो इंद्रियों के समूह से परे है

715) भगाराध्या – वह जो ब्रह्मांड में पूजा करने वाला है, वह सूरज के चारों ओर है

716) माया – वह जो भ्रम है

717) मधुमती – वह योग में ट्रान्स स्टेज (सातवीं) है

718) मही – वह है जो पृथ्वी की पहचान है

719) गणाम्बा – वह जो गणेश और भूता गण के लिए माँ है

720) गुह्यकाराध्या – वह जिसे गुप्त स्थानों में पूजा जाना चाहिए

721) कोमलाङ्गी – वह जिसके पास सुंदर अंग हैं

722) गुरुपिया – वह जो शिक्षकों को पसंद करती है

स्वतन्त्रा सर्वतन्त्रेशी दक्षिणामूर्ति–रूपिणी ।
सनकादि–समाराध्या शिवज्ञान–प्रदायिनी ।। १४०।।

723) स्वतन्त्रा – वह स्वतंत्र है। वह जो सभी सीमाओं से मुक्त हो

724) सर्वतन्त्रेशी – वह जो सभी थथ्रों की देवी है (भगवान को पाने के गुर)

725) दक्षिणामूर्तिरूपिणी – वह दक्षिण का सामना करने वाले भगवान का व्यक्तित्व है (शिव का शिक्षक रूप)

726) सनकादिसमाराध्या – वह जो सनक संतों द्वारा पूजा की जा रही है

727) शिवज्ञानप्रदायिनी– वह जो भगवान का ज्ञान देता है

चित्कलाऽऽनन्द–कलिका प्रेमरूपा प्रियङ्करी ।
नामपारायण–प्रीता नन्दिविद्या नटेश्वरी ।। १४१।।

728) चित्कला – वह सूक्ष्म शक्ति है जो भीतर ही भीतर गहरी है

729) आनंदकलिका– वह जो प्राणियों में सुखी है

730) प्रेमरूपा – वह जो प्रेम का रूप है

731) प्रियङ्करी – वह जो पसंद करती है, करती है

732) नामपारयणप्रीता– वह जो अपने विभिन्न नामों की पुनरावृत्ति पसंद करती है

733) नन्दिविद्या – वह नंदी देव द्वारा सिखाया गया ज्ञान है (बैल देवता जिस पर शिव की सवारी होती है)

734) नटेश्वरी – वह नृत्य की देवी है

मिथ्या–जगदधिष्ठाना मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी ।

लास्यप्रिया लयकरी लज्जा रम्भादिवन्दिता ।। १४२।।

735) मिथ्याजगदधिष्ठाना – वह जो भ्रम की इस दुनिया के लिए किस्मत है

736) मुक्तिदा – वह जो मुक्ति देता है

737) मुक्तिरूपिणी – वह जो मुक्ति के रूप में है

738) लास्यप्रिया – वह स्त्री नृत्य पसंद करती है

739) लयकरी – वह नृत्य और संगीत के बीच का सेतु है

740) लज्जा – वह जो शर्मीला है

741) रम्भादिवन्दिता – वह जो खगोलीय नर्तकियों द्वारा पूजा की जाती है

भवदाव–सुधावृष्टिः पापारण्य–दवानला ।

दौर्भाग्य–तूलवातूला जराध्वान्त–रविप्रभा ।। १४३।।

742) भवदावसुधावृष्टिः – वह जो अमृत की वर्षा के साथ नश्वर जीवों के दुखद जीवन की वन अग्नि को नमन करता है।

743) पापारण्यदवानला– वह जंगल की आग है जो पाप के जंगल को नष्ट कर देती है

744) दौर्भाग्यतुलवातूला – वह चक्रवात है जो बुरी किस्मत को दूर करता है।

745) जराध्वान्तरविप्रभा – वह सूरज की किरणें हैं जो बुढ़ापे के अंधेरे को निगल जाती है

भाग्याब्धि–चन्द्रिका भक्त–चित्तकेकि–घनाघना ।

रोगपर्वत–दम्भोर्लि मृत्युदारु–कुठारिका ।। १४४।।

746) भाग्याब्धिचन्द्रिका – वह जो भाग्य के समुद्र में पूर्णिमा है

747) भक्तचित्तकेकिघनाघना – वह मोर का काला बादल है, जो उसका भक्त है

748) रोगपर्वतदम्भोर्लि– वह वज्र अस्त्र है जो बीमारी को तोड़ता है जो पहाड़ की तरह है

749) मृत्युदारुकुठारिका – वह उस कुल्हाड़ी की तरह है जो मौत के पेड़ को गिरा देती है

महेश्वरी महाकाली महाग्रासा महाशना ।

अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुर–निषूदिनी ।। १४५।।

750) महेश्वरी – वह सबसे बड़ी देवी है

751) महाकाली – वह जो महान कली है

श्री ललीता सहस्र नाम स्तोत्र-VI

752) महाग्रासा – वह जो एक महान पीने के कटोरे की तरह है।

753) महाशना – वह महान भक्षक है

754) अपर्णा – वह जिसने बिना पान खाए भी ध्यान किया है।

755) चण्डिका – वह सर्वोच्च गुस्से में है

756) चण्डमुण्डासुरनिषुदिनी – उसने चंदा और मुंडा नामक असुरों को मार डाला

क्षराक्षरात्मिका सर्व–लोकेशी विश्वधारिणी ।
त्रिवर्गदात्री सुभगा त्र्यम्बका त्रिगुणात्मिका ।। १४६ ।।

757) क्षराक्षरात्मिका –वह जो कभी नष्ट नहीं हो सकता और नष्ट भी हो सकता है

758) सर्वलोकेशी – वह जो सभी लोकों की देवी है

759) विश्वधारिणी – वह जो सारे ब्रह्मांड को वहन करती है

760) त्रिवर्गदात्री – वह जो धर्म, संपत्ति और सुख देता है

761) सुभगा – वह जो देखने में प्रसन्न है

762) त्र्यम्बका – वह जिसके पास तीन आँखें हैं

763) त्रिगुणात्मिका – वह जो तीन बंदूकों की पहचान है। , थमो (काली), राजो (दुर्गा) और सत्व (पार्वती)

स्वर्गापवर्गदा शुद्धा जपापुष्प–निभाकृतिः ।

ओजोवती द्युतिधरा यज्ञरूपा प्रियव्रता ।। १४७।।

764) स्वर्गापवर्गदा – वह जो स्वर्ग और उसके लिए रास्ता देती है।

765) शुद्धा – वह जो साफ है

766) जपापुष्पनिभाकृतिः – वह जो गुड़हल के फूल (हिबिस्कस) का रंग है

767) ओजोवती – वह जोश से भरी है

768) द्युतिधरा – वह जिसके पास प्रकाश है

769) यज्ञरूपा – वह बलिदान के रूप में है

770) प्रियव्रता – वह जो तपस्या पसंद करता है

दुराराध्या दुराधर्षा पाटली–कुसुम–प्रिया ।

महती मेरुनिलया मन्दार–कुसुम–प्रिया ।। १४८।।

771) दुराराध्या – वह जो पूजा के लिए शायद ही उपलब्ध हो।

772) दुराधर्षा – वह जीता नहीं जा सकता

773) पाटलीकुसुमप्रिया – वह जो पाटली के पेड़ की कलियों को पसंद करता है

774) महती – वह जो बड़ी है

775) मेरुनिलया – वह जो मेरु पर्वत में रहती है

776) मन्दारकुसुमप्रिया – वह मंदरा के पेड़ की कलियों को पसंद करती है

वीराराध्या विराड्रूपा विरजा विश्वतोमुखी ।

प्रत्यग्रूपा पराकाशा प्राणदा प्राणरूपिणी ।। १४६ ।।

777) वीराराध्या – वह वीरों द्वारा पूजी जाती है

778) विराड्रूपा – वह जो एक सार्वभौमिक देखो

779) विरजा – वह जिसके पास कोई दोष नहीं है

780) विश्वतोमुखी – वह जो हर एक की आँखों से देखता है

781) प्रत्ययग्रूपा – वह जिसे अंदर देखकर देखा जा सकता है

782) पराक्राशा – वह महान आकाश है

783) प्राणदा – वह जो आत्मा देता है

784) प्राणरूपिणी – वह आत्मा है

मार्ताण्ड–भैरवाराध्या मन्त्रिणीन्यस्त–राज्यधूः ।

त्रिपुरेशी जयत्सेना निस्त्रैगुण्या परापरा ।। १५० ।।

785) मार्तण्डभैरवाराध्या – वह मार्तण्ड भैरव द्वारा पूजित है

786) मन्त्रिणीन्यस्तराज्यधूः – वह जिसने अपने मन्त्रिनी के रूप में शासन करने की शक्ति दी

787) त्रिपुरेशी – वह जो तीन शहरों का प्रमुख है

788) जयत्सेना – वह जिसके पास एक सेना है जो जीतता है

789) निस्त्रैगुण्या – वह जो तीन गुणों से ऊपर है

790) परापरा – वह जो बाहर और अंदर है

पाठगत प्रश्न– 17.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. .... स्वर्णगर्भाऽवरदा वागधीश्वरी ।
2. सर्ववेदान्त–संवेद्या ....–स्वरूपिणी ।
3. अदृश्या दृश्यरहिता .... वेद्यवर्जिता ।
4. इच्छाशक्ति–......................–क्रियाशक्ति–स्वरूपिणी ।
5. अष्टमूर्तिर्...................... लोकयात्रा–विधायिनी ।
6. ....बृहत्सेना भावाभाव–विवर्जिता ।
7. राज–राजेश्वरी .... राज्य–वल्लभा ।
8. राज्यलक्ष्मीः .... चतुरङ्ग–बलेश्वरी ।
9. देश–कालापरिच्छिन्ना सर्वगा .... ।
10. कुलोत्तीर्णा भगाराध्या माया .... मही ।

आपने क्या सीखा?

- श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करना।
- देवी ललिता के लिए प्रयोग किये गये विशेषक शब्दों का अर्थज्ञान।
- देवी ललिता की विशेषताएं।

पाठांत प्रश्न

(1) नीचे दिये गये पदों का हिन्दी का अर्थ लिखिए

1. घनाघना
2. महाकाली
3. मुक्तिरूपिणी
4. दौर्भाग्य–तूलवातूला
5. चण्डिका
6. त्र्यम्बका

उत्तरमाला

17.1

1. विश्वगर्भा
2. सत्यानन्द
3. विज्ञात्री
4. ज्ञानशक्ति
5. अजाजैत्री
6. भाषारूपा
7. राज्य–दायिनी
8. कोशनाथा
9. सर्वमोहिनी
10. मधुमती